March 2011	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
			1	2	3	4	5
	6	7	8	9	10	11	12
	13	14	15	16	17	18	19
	20	21	22	23	24	25	26
	27	28	29	30	31		

2011 February

B.A Part III Paper V Indian Ethics

25 FRI 22/05/2020 Jain Ethics

Dr. Anita Kr. Gupta
J.K. College Biraul

वेदों के प्रामाण को स्वीकार न करने तथा ईश्वर में आस्था न रखने वाले भारतीय दर्शनों में जैन-दर्शन का स्थान चार्वाक-दर्शन के बाद आता है। अधिकांश आधुनिक विद्वान जैन-धर्म के प्रवर्तक वर्धमान महावीर को मानकर उसका प्रारम्भ छठी शताब्दी ई०पू० में मानते हैं। किन्तु जैन मान्यता के अनुसार महावीर उसके चौबीस तीर्थंकरों में से अंतिम अर्थात चौबीसवें तीर्थंकर हैं। उसके प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे। महावीर ने तो मात्र उसके सैद्धांतिक आधार को दृढ़ बनाकर उसे व्यवस्थित किया। 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ काशी के राजा अश्वसेन और महारानी वामादेवी के पुत्र थे। उन्होंने चार महाव्रतों - अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह के अनुष्ठान पर

26 SAT अधिक बल दिया था, जिसमें एक ब्रह्मचर्य को और बढ़ाकर महावीर ने महाव्रतों की संख्या 5 कर दी थी। बाद में जैन श्वेताम्बर तथा दिगम्बर दो सम्प्रदायों में विभक्त हो गया। इन सम्प्रदायों के मतभेद का मुख्य आधार नियम पालन था।

जैन धर्म के मूल ग्रन्थ 'आगम' कहलाते हैं। ये भगवान महावीर की वाणी रूप हैं और इनका संकलन बाद के गणधरों ने श्रुतपरम्परा के आधार पर किया। ये सब के सब अर्द्धमागधी प्राकृत में हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदाय के निम्नलिखित आगम-ग्रन्थों का संग्रह किया गया है।

1. अंग - ये संख्या में बारह हैं - आचारांगसूत्र, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, भगवती सूत्र, ज्ञातधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृद्दशा, अनुत्तरौपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण, विपाकसूत्र,

Notes

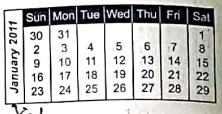

January 2011	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
	30	31					1
	2	3	4	5	6	7	8
	9	10	11	12	13	14	15
	16	17	18	19	20	21	22
	23	24	25	26	27	28	29

और दृष्टिवाद। अंतिम ग्रंथ अब उपलब्ध नहीं है।

27 SUN

2. पूर्व – 'दृष्टिवाद' में चौदह पूर्वग्रन्थों का समावेश था। इनको 'पूर्व' सम्भवतः इसलिए कहते हैं कि वे अर्वाचीन आगम ग्रन्थों के पूर्व के हैं। इनके नाम ये हैं- उत्पाद, अग्रायणीय, वीर्यप्रवाद, अस्तिनास्तिप्रवाद, ज्ञानप्रवाद, सत्यप्रवाद, आत्मप्रवाद, कर्मप्रवाद, प्रत्याख्यानप्रवाद, विद्यानुप्रवाद, अवन्ध्य, प्राणायु, क्रियाविशाल तथा लोकबिन्दुसार। ये ग्रन्थ भी अब नहीं मिलते।

इनके बारह 'उपांग' हैं और दस 'प्रकीर्ण' हैं जिनके नाम ये निम्न हैं:-

(क) उपांग- औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाभिगम, प्रज्ञापना, सूर्यप्रज्ञप्ति, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, निर्यावलिका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका और वृष्णिदशा।

(ख) प्रकीर्ण- चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, संस्तार, तण्डुलवैतालिक, चन्द्रवेध्यक, देवेन्द्रस्तव, गणितविद्या,

28 MON

महाप्रत्याख्यान तथा वीरस्तव।

महावीर और अन्य तीर्थंकरों के अलावा प्रमुख जैन दार्शनिक आचार्य कुन्दकुन्द, उमास्वाति, स्वामी समन्तभद्र, सिद्धसेन दिवाकर, सिद्धसेन गणी, हरिभद्र सूरि, अकलंकदेव आदि हैं।

अध्ययन की गम्भीरता तथा चिंतन की सूक्ष्मता की दृष्टि से जैन-दार्शनिक किसी भी दार्शनिक से पीछे नहीं हैं। उनकी प्रौढ़ तर्क और अटूट युक्तियां उनके दार्शनिक सिद्धांतों को आज तक सुरक्षित रख रही हैं।

जैन-दर्शन के तत्त्वों का मूलाधार व्यक्ति का दैनिक अनुभव है। इसीलिए लोग इसे प्रत्यक्षवादी दर्शन मानते हैं। अनुभव की विभिन्नता का आधार लेकर

Notes

April 2011	Sun	Mon	Tue	Wed	Thu	Fri	Sat
						1	2
	3	4	5	6	7	8	9
	10	11	12	13	14	15	16
	17	18	19	20	21	22	23
	24	25	26	27	28	29	30

1 TUE

जैनों ने यहाँ सभी प्रकार के मतों में दार्शनिक सत्यता को स्वीकार किया गया है।

जैन दर्शन अनेकान्तवाद में विश्वास करता है। उसके अनुसार वस्तुओं के अनन्त गुण या धर्म होते हैं। जैन दर्शन में सत्तान्वय सूचक गुण को 'स्वपर्याय' और निषेधमुखेन सूचनीय गुण को 'परपर्याय' के नाम से अभिहित किया जाता है। क्योंकि मनुष्य के लिए किसी वस्तु का वर्णन 'परपर्याय' करना संभव नहीं है, इसलिए स्वपर्याय से ही उसका निर्देश करता है। सब वस्तुएं या पदार्थ एकरूपता नहीं, अपितु अनेकरूपता प्रकट करती हैं। कोई वर्णन किसी दृष्टिकोण पर आधारित होता है तो दूसरा वर्णन किसी और दृष्टिकोण पर आधारित होता है। पदार्थों के विविध गुण जो उनकी सत्ता के अनुकूल हैं अथवा वे गुण जो निषेधमुखेन कहे जाते हैं

2 WED

उनकी अनन्तता की सूचना देते हैं।

Notes

Scanned by CamScanner